पेपर - 9

अग्निगर्भ

उपन्यास

Scanned with CamScanner

पात्र

1. काली सांतरा - 'जिला वार्ता' के संपादक पत्र
2. बसाई टूडू काली सांतरा का सहयोगी
3. देवकी - ए. ए. एस. आई
4. बेतुल सांतरा - क्रांतिकारी
5. जागुला - क्रांतिकारी
6. सूर्य साउ - किसान सभा का सदस्य।
7. स्वामी सहजानंद
8. नवीन गड़ाई
9. मोती दास
10. मुसई टूडू
11. बेतुल
12. उहदन
13. गिन्नी माला
14. प्रताप
15. जहान हेम्ब्रम
16. गोपी मांझी
17. नीरू भगत

B612

Scanned with CamScanner

उपन्यास की पृष्ठभूमि — 1 —

पश्चिमी बंगाल और भारत वर्ष के कृषक वर्ग भूमिहीन किसानों के असंतोष और विद्रोह की प्रकृति की हुई है। यह विद्रोह संथाली विद्रोह, बहाली आंदोलन, नील विद्रोह के रूप में दिखाई देता है। मई, जून 1967 नक्सलबाड़ी अंचल में हुए आंदोलन का भी विवेचन किया गया है। लेखिका के अनुसार दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी, खड़ीबाड़ी आदि गांवों में अधिकांश भूमिहीन किसान हैं। उनमें मेची, लेप्चा, भोटिया, संथाल, ओरांव राजबंशी, गोरखा सम्प्रदाय के लोग हैं। स्थानीय जमींदारों ने इन वर्गों के लोगों का शोषण किया। 'अधिया' अधिया व्यवस्था के अनुसार जमींदार भूमिहीन किसानों से बीज के लिए धान, हल-बैल, खाना और मामूली पैसे देकर खेती करवाते थे और उपज का अधिकांश भाग जमींदार के घर जाता था। इसके विरोध में किसानों में असंतोष और विद्रोह की भावनाएं पनपी। उपज का अधिक बड़ा भाग जमींदार के घर जाना, मामूली बहाना बनाकर किसान को जमीन से बेदखल कर देना आदि कारणों से किसानों में असंतोष और संघर्ष की भावना पनपी। फलतः 1955 में सरकार ने 'इस्टेट एक्वीजिशन एक्ट' पास किया। इस कानून की निर्धारित ... कि कोई व्यक्ति कुल मिलाकर 25 एकड़ जमीन से ज्यादा नहीं रख सकता। इस कानून के लागू होने पर जमींदारों के पास बेनामी जमीन कब्जे में रह गई। सन 1971 में परिवार के आधार पर भूमि की उच्चतम सीमा निर्धारित की गई। इससे किसानों को कोई लाभ नहीं मिला।

असंतोष का मुख्य कारण यह भी था कि इस इलाके में चाय बागानों की ... जमीन थी ... बाहर से लाए गए थे। यहाँ काम करने वाले मजदूर बागान मालिकों ... ये मजदूर कालांतर में यहां के निवासी हो गए। इन लोगों का जमीन मालिकों द्वारा शोषण किया गया। इन चाय बागानों के मालिकों के कब्जे में जो अतिरिक्त जमीन थी, उसे उन्होंने अपने आश्रित व्यक्तियों में बाँट दी। सन पचास के मध्य भाग में चाय-बागान मालिकों के विरुद्ध आंदोलन आरंभ किया। मूल मांग यह थी कि चाय-बागान की भूमि का अधिग्रहण सरकार करे और अतिरिक्त भूमि को मजदूर किसानों में बाँट दी जाए।

सन 1958 में इस आंदोलन ने भयंकर रूप धारण कर लिया
फलस्वरूप बागान मालिकों ने किसान मजदूरों को उखाड़
फेंका और घर आदि को हाथियों से कुचलवा दिया। इस अत्याचार
व अन्याय के विरुद्ध नक्सलवाड़ी के किसान संगठित होकर विद्रोह
के पथ पर चल पड़े। इस आंदोलन को नक्सलवाड़ी नाम दिया
गया। इसका प्रभाव आंध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु आदि
क्षेत्रों पर भी पड़ा। इस आंदोलन के फलस्वरूप उसके अनुयायी
नवयुवक हिंसा की राजनीति लाये। इधर भूखे किसानों का अन्दोलन
बेरोकटोक चलता रहा। जमींदारों ने बेनामी जमीन को किसानों को
मिलिकयत कर दी। इससे चक्रवृद्धि ब्याज और बेगार ढोने की
प्रवृत्ति चल पड़ी। इधर ... लोगों को चीना घास
के बीज के अलावा दूसरी चीज खाने को नहीं मिलती थी।
जिन कारणों से आंदोलन चले वे आज भी मौजूद हैं।
इस उपन्यास में लेखिका का मत
है कि मेरी कहानियों की प्रस्तुति का उद्देश्य नक्सलवाड़ी
... को प्रस्तुत करना है व समस्या केवल भूमि की
नहीं है। खेत-मजदूर किसान अपने प्राप्य से वंचित हैं। स्वा-
वीज के लिए उन्हें अनेक समस्याएं झेलनी पड़ती हैं। स्वतंत्रता
के बाद खेत मजदूर व किसान को कोई लाभ नहीं मिला। एक
तरफ धनी वर्ग अधिक धनी होगए तथा किसान-मजदूर
गरीब होते चले गए। लेखिका के अनुसार बेकारी की समस्या
निरंतर बढ़ रही है और महंगाई आकाश को छू रही है। समाज में
वर्ग ... निरंतर बढ़ रहा है, उसे रेखांकित करना लेखक का दा-
यित्व है। लेखिका के अनुसार, शोषित और पीड़ित मानव के
प्रति संवेदनशील होना और लेखन की प्रधान भूमिका है।
लेखिका का मत है अन्न, जल, जमीन, कर्ज, ... आदि से
मुक्ति नहीं मिली है। जिस व्यवस्था ने यह मुक्ति नहीं दी उसके
विरुद्ध ... की प्रेरणा है। इसलिए वाम-पन्थी दल
सामान्य वर्ग की समस्याओं को हल करने में असफल रहे हैं

परिच्छेद भाग - I (७)

सन् सत्तर की बात है। इलाके के सभी दुकानदार, रंगदार बन गये
बोझा ढोने वाले, वकील, व्यापारी, साईकिल रिक्शा वाले थाने पर पहुंचा था।
था। उनका काम मुतलब की खबर जुटाकर [illegible] मिलती थी। इधर काली साँ
तेलन के नाम पर इन्हें थाने की सुरक्षा मिलती थी। इनके साथ बसाई भी
शासन का आदमी है और किसान आंदोलन में इनके काली सांतरा संपादक थे।
साथी था। 'जिला वार्ता' साप्ताहिक पत्र के काली सांतरा संपादक थे।
वे अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी जनता में अच्छी छवि
थी। उन्होंने 'जिला वार्ता' पत्र के माध्यम से किसानों को शिक्षा देने
की बात प्रकाशित की। काली सांतरा समाजवाद के समर्थक थे। काली
सांतरा के जीवन में बसाई टुडू का विशेष सहयोग रहा था।
[illegible] काली [illegible] को बताया कि बसाई टुडू के संगठन में
मारा गया है। लेकिन उसने [illegible] के जंगल का वर्णन किया है जहाँ केंदू,
आँवला, महुआ आदि के पेड़ उगे हुए थे।

परिच्छेद भाग - का 2

इस भाग में बसाई नामक पात्र का
उल्लेख हुआ है जो पहले नक्सली नहीं था। बाद में लोग उन
जाता है और लीडर बनकर भूमिहीनों के झंड [illegible] लेकर [illegible] गोली
मजदूरों और [illegible] को [illegible] फौज [illegible] करेंगे।
इस बार नक्सली [illegible] कोई नतीजा नहीं निकला। बसाई टुडू का निर्
चलाये। लेकिन खबर फैलाई की वह मर गया है लेकिन वह मरा
जाता है। अफवाह फैलाई है कि वह मरकर भी नहीं मरा। वह प्रशासन
नहीं। एस० आई० कहता है कि वह [illegible] हड्डियों का बना है
का बैरी है। वह राक्षस [illegible]

परिच्छेद भाग - 3

बसाई व सामन्त में मन-मुटाव हो गया था
इधर देवकी ने सामंत की मदद की। बसाई ने सौ में से नब्बे
लोगों को या तो आर्म्स एनकाउंटर या फर्जी केस [illegible] करा दिया।
लेकिन सौ में से दस लोगों को इशारा किया कि आप लोग यहाँ
से भाग जाओ।

परिच्छेद भाग - 4

केदुल सांतरा आजकल मजदूर नहीं है। उसके
पास काली सांतरा के पिता द्वारा दी गई [illegible] बीघा जमीन थी। बाद में
काली सांतरा ने यह जमीन मजदूरों को दे दी। इसके दो कारण थे —
कम्युनिस्ट व्यक्तिगत मिलकियत में विश्वास नहीं करते - दूसरे वह आदर्श
रखना चाहता था। क्रांतिकारी जागुला ने भी इसके क्रांतिकारी को जमीन
देकर काली सांतरा को अपना नेता बना लिया था। काली सांतरा ने
सोचा [illegible] भविष्य में कम्युनिस्ट पार्टी [illegible] और खाने-पीने की समस्या [illegible]

परिच्छेद-5

बसाई और काली का मेल-मिलाप हो जाता। काली बसाई से पूछता है कि उसने किसान सभा क्यों छोड़ी? पार्टी में 'दुर्य साउ' के आ... गया निराश हो गई थी। इधर पूर्ण नाग के लड़के ने दुर्ग कॉमरेड को मार दी। उनकी और स्वामी सहनाग्र हो हुई। उन्होंने कलार खेत-मजदूर आंदोलन किसान-सभा का आंदोलन हो। बसाई व काली की लम्बी बातें प्रस्तुत की गई है।

परिच्छेद-6

पुराने कामरेड बसाई टुडू ने दल छोड़ दिया। काली सांतरा उसे समझाता है। नवीन मंडाई व मोतीचन्द उसे समझाने का प्रयास करते हैं। बसाई ने कहा कोई विशेष बात नहीं है। नवीन व मोती उसकी बात सुनकर घबरा जाते हैं। बसाई पुनः पार्टी में आ जाता है। बसाई (नक्सलवादी नहीं हुआ) होने का संदेह। इधर जमींदारों ने न्यूनतम मजदूरी नहीं देते हैं। काली सरकार की मदद से धान काट देता है। खेत मजदूरों ने कम्युनिस्ट पार्टी व सी.पी.आई. से मदद माँगी।

परिच्छेद-7

बसाई व काली (सांतरा) के वार्तालाप। केवल व उनकी बातचीत + ग्रामीण समस्याओं के बारे में।

परिच्छेद-8

'बनारी' गाँव का वर्णन - संथाल, केउट, हरिजनों के लोग रहते हैं। उनका पेशा है - खेत मजदूरी। प्रताप पाँच हजार बीघे का मालिक। यह बुनियादी पाठशाला को गाँव से भगा देता है। यह बनारी गाँव का इतिहास है। हाकिम बी.डी.ओ. मंत्री, कृषिमंत्री अफसर, एम.एल.ए. सभी प्रताप के यहाँ हाजिरी देते हैं। सन् 1968 में सरकार ने घोषणा की थी कि मर्द को तीन रु. 25 पै. औरतों को तीन रु. 27 पै. बच्चे मजदूरों को 2 रु. मिलेंगे। चरसा नदी में बाढ़ आ... माधव टुडू और गाबी मांझी प्रसाद से जुड़े हुए हैं। वीरल पावका क्रांतिकारी पुत्र था।

परिच्छेद - 9

सन 1972 में रामेश्वर नामक व्यक्ति घोषणा करता है कि वह आस-पास के लोगों को काम नहीं देगा। सब काम बाहर के व्यक्तियों से कराया जाएगा। रामेश्वर बड़ा जमींदार है। रामेश्वर का साला कहता है कि संथालों ने घेरा डाल दिया है व कसाई दूदू के साथ मिल गए हैं। मौके पर पुलिस आती है तो एक कांग्रेसी युवक ने जोर से कहा कि फायर मत कीजिएगा। धान के खेतों में आग लगाई गई गोलियों की बौछार होने लगी। बसाई की बर्छी डी.एस.पी. के पेट में लगी पुलिस के पैरों में तीर लगे। बसाई के पेट में गोली लगी। उसे अस्पताल ले जाया गया। कालीसंतरा उससे मिलने आता है। इस संघर्ष में बसाई मारा जाता है। इस संघर्ष में डी.एस.पी. व रामेश्वर बच गये। पड़ोस के गाँवों में हाहाकार मच गया।

परिच्छेद - 10

पुलिस और किसान मजदूरों में अचंभा विद्रोह हुआ जिसमें बसाई दूदू को गोलियों से छलनी कर दिया। इसमें अर्जुन सिंह का नामक व्यक्ति का हाथ था।
इस संघर्ष में 41 लाशें मिलीं।